4. पोखरिक दान

एगो गाँवे सात भाय आर एक बहिन रहथ। सातो भाय मिली के एगो पोखइर कोड़े लागला। ढेइर गाढ़ा कोड़ल बाद्हूँ पानीक झार नी बाढ़े, पानी भोरबे नी करे। एक दिन सपना देखला कि पोखइरे पानी तबे भोरत जबे तोहिन हियां बहिन के दान दिये पारबाय!

बिहाने बड़का कहल – मांय तोञ् आइझ कलवा लेगे नी जाबे आइझ मंइयाँ के भेजाय देसी। मांय कहइल – हाँ, रे! मंइयाँ तो कहियो हुवां गेले नखिक, तो जाइत कइसे ?

मंइझला कहल – हार दुरिये ठीन ले हरगड़ले जाब, ओहे चिन्हवे आवइत तो ठीके पावइत।

अच्छा ठीक हे – मांय कहइल।

बिहाने ओखिन ओहे नीयर दुरिये ले हरगड़ले गेला आर ओकरे देखले–देखले ऊ गेइल कलवा लेले। हुवां पोहचइल आर कलवा धारइल, पानीक जोगाड़ करे खोजे लागइल तखन कहला जांय मइंयाँ पोखरिया ले पानी लेइ के आवबे। मंइयाँ आपन सोनाक नरुवा लेइके गेइल पानी भोरे ले, मुदा, ओकर नरुवा भोरबे नी करे तब ऊ गावे लागइल –

''घुटिया भोइर–भोइर पनिया हो दादा, तावो नी भोरइ सोनाक नरुवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''
''ठेहुना भोइर–भोइर पनिया हो दादा, तावो नी भोरइ सोनाक नरुवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''
''जंघवा भोइर–भोइर पनिया हो दादा, तावो नी भोरइ सोनाक नरुवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''
''छतिया भोइर–भोइर पनिया हो दादा, तावो नी भोरइ सोनाक नरुवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''
''घेंचवा भोइर–भोइर पनिया हो दादा, तावो नी मोरइ सोनाक नरूवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''
''मुँहवाँ भोइर–भोइर पनिया हो दादा, तावो नी भोरइ सोनाक नरूवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''
''मुड़िया भोइर–भोइर पनिया हो दादा तावो नी भोरइ सोनाक नरूवा।''
''ओते जांय मंइयाँ ओते जांय।''

ओते जइस्ही गेलीक कि ऊ डूइब गेलीक आर मोरइल। बस तुरते पोखइर पानी से भोरी गेल ।

सातो भाय घार घुरला तखन मांय पूछइल – मंइयाँ जे नी आवहिक। ऊ कते पाछु हिक ! ''

''मंइयाँ आब नी आवतउ !''
''काहे ? किना भेलई रे।''

पोखरिया पानी भोरे गेल रहिक, से हुवां पिछरइल आर डूबइल। हामीन सोब छाँके ले बड़ी कोसिस करली मगुर बहरावे नी पारलिअइ। सोब भाय एके बात दोहरावला।

ऊ बहिन कर नाम रहइ 'मांजइत'। ऊ एगो सुगा पोसल रहीक। ओकर बिहा हेल रहइ मुदा गवना बाकी रहइ। राइते ओकर पुरुस (पति) के सपना मिलल कि आवेक होन तो आवा, नी तो आर नी पावबाय! भाय सब हमरा पोखरिक दान दिये खोजल हथ। बिहाने

ओकर पुरुस उठल आर आपन मांय के कहल – ''मांय गो! हाम ससुराइर जाबउ, लियावन खातिर, से संदेस बनाय दे।''

मांय कहइल – ''हाँ रे बाबु! गवना नी भेल हउ तो लियावन कइसे देबथू?''

''कइसे नी देता ? बनाव नी संदेस, हाम जरुर जाइब। जल्दी कर देरी हेले काम बेड़ांय जाइत।''

ओकर मांय संदेस बनावइल। ऊ घोड़ा भींड़ल अगर चढ़ी के चलल। ओहे पोखइर कर भींड़ पोहचल कि एगो सुगा के गावल सुनल –

''कहाँ गेले गे, कहाँ गेले गे मांजइत दीदी ?''

''का कहे रे, का कहे रे रायमल सुगा। दादा देलथू पोखरिक दान।''

ऊ ठढुवाइल आर सुगा के कहल – ''ए सुगा! हामर पियारा सुगा, एक झीक आर गाव नी। बड़ा बेस सुना हउ!''

सुगा फिन गावे लागल। ई नीयर तीन चाइर झीक गवावल, दुइयो कर बात–चीत सुनी के ओकरा पूरा बिसुआस हेइ गेल कि ई कोय दोसर नांय बस ओहे लागीक आर कहल – ''जदि, तोंय असल में हामर बहु हेके तो देखाड़ हेइ जा ?''

ऊ कहइल – भाय, तोञ् कोन लागें ? चोर कि चुहाड़, डोम कि चांडाल। दुर हइ जा।

''हाम तो तोर पुरुस लागीयउ! तोरे हंकावल पर आइल ही।'' हाँ, तो, तोञ ओहे लागाय। तबे पहिले गोड़ लागहियो तोहरा आर तोहर सब पुरखा के।''

''तो चाल, आव बाहरांय, लेगे आइल हिअउ।''

ऊ बहराइल, बस ओकरा आपन जांघे धारल आर चलल आपन ससुराइर। हुवां आइके दुवाइरे ठढुवाइल। तबे पहिले बड़की भवजाइ लोटा–पानी लेइ के बहराइल आर कहे लागइल –

''घोड़वा से उतरु भइया, पंइरा पखारु हो,
पंइरा पखारु हो''।
''घोड़वा से उत्तरब दीदी, घोड़वा से उत्तरब गो।
पहिले तो हामर धनी, देहू देखाय गो।।''
''का जे कहब भइया, का जे बुझावब हो
तोर धनी जे मोरी हेराय गेइल हो।''
''मोरीये गेलीक धनी, मोरीये जे गेलीक गो
छाय–बानी देहु जे देखाय गो।।''
''आइल रिमी–झीमी, बरीसल पानी हो
छाय–बानी गेलइ–बोहाय हो।''

एहे लेखे सातो गोतनी लोटा–पानी लेइके बहराला आर सातों संग एहे नीयर कहा–कही बात–चीत हेल। आखरी में साइस बहराइल आर ओहो कहे लागइल–

''घोड़वा से उतरा बाबु, पइरा पखारु गो।''
''पहिले हामर धनी देहू जे देखाय गो।।''
''का जे कहब बाबु, का जे बुझावब गो।''
''तोर धनी मोरी–हेराय गेइल गो।।''
''मोरीये जे गेलीक धनी, हेराय जे गेलीक गो।
छाय–बानी देहू देखाय गो।।''
''आइल रिमी–झीमी, बरीसल पानी हो।
छाय–बानी गेलइ बोहाय गो।।''

ठीक हे जदि मोरी हेराय गेइल, छाय–बानी पानीये बोहाय गेल ताव जदि हाम ओकरा जीयत करबइ तो का देबाय ?'' साइस कहइल – जीयत करबाय तो हाम तोहरा आपन आधा राइज देबोन।''

''पक्का''

''हाँ, पक्का।''

तब ऊ घोड़ा से नाभल, गोड़ धोवल आर ढुकल घार। कोहबर घारे ऊ आपन जांघ ले ओकरा बहरावल। सुखी से सोब नाची उठला आर पूरा रीति – रिवाजे गवना देला आर दहेजे आधा राइजो।

5. बितना

एगो बितना रहे। ओकर मांय–बाप मोरल रहथ। आयो जीयंत रहीक ओहे पोस–हलीक। ओकर ठीन एगो भंइस रहइ, जकार ऊ चराव हल। एक दिन भंइस कर पूंछ धायके जाहल कि भंइस हागी देइल आर बितना चोतांय तोपाय गेल। भंइस अगुवाइ गेइल आर राजाक खेते हेलइल। राजा कर सिपाही भंइस के खेदी के राजा घार लेइ गेला। हिन्दे बितना बहराय खातिर छटपटाय लागल मुदा बहराइ नी पारे। ओकर आयो गोबर बिछले आइल तो ओकरा चोतांय छटपटाइल देखइल। ओकरा जल्दी बहरावइल। बितना

धोय–धाय के भंइस के खोजे चलल तो थोरेक धूरे ओकरा पता चलल कि राजा ऊ भंइस के मरवाइ देल। बितना कांदले–कांदले घार घुरल आर आयो ठीन खूब कांदे लागल। बुढ़ियो आपन फूटल कपारे कांदे लागइल, तखन बितना कहल– ए आयो जांय राजा घार कांदले आर कोनो नीयर भंइसियाक चमवा मांगी के लान, ओकरा हाम बेचे जाइब, कुछो तो काचा पावब।

बितनाक नेहर सुनी के डेराइल–डेराइल राजा घार गेइल आर कांदइत–कलपइत ऊ मारल भंइसियाक चाम माँगे लागइल। बुढ़ीक कांदल–कलपइत देखी के राजा के दया आइल आर चाम दिये ले कहल।

बितना ऊ चाम के सुखावल आर एक दिन सातु–सांमर बांइध के चलल चाम बेचे। साइंझ भेइ गेल मगुर चाम नी बेचाइल, ऊ एगो गाछे चढ़ी के राइत काटेक सोंचल। आधा राइत बीतल तखन देखहे – कइ गो चोर, चोराय लानल रुपिया के बांटी रहल हथ। बांटे में बेईमानी देखी के बितना से रहल नी गेल आर कही उठल – 'काना–अंधरा सोब के बराइबर' आर चाम के गिराय देल। खड़खड़ाइल चाम के गिरइत सुनी के चोर भूत–भूत कहले भागला । सोब के भागल देखी के बितना आस्ते–आस्ते नाभल आर सोब काचा के बांधल आर आपन घार घुरल।

बितना तो गिने नी जाने से ले ऊ नापे ले सोंचल। आयो के राजा घार ले पइला माँगी के लाने कहल। राजाक देवान के सक भेल कि का बात हइ जे आइझ ई बुढ़िया पइला माँगे आइल हीक, से ले चुपे से पेन्दवा में लासा लटकाय देल आर पइला बुढ़ी के देइ देल।

बितना काचा के नापल आर एक पइला काचा राजा घार भेजाय देल आर आयो से कहल – कि जदि तोरा राजा पूछतउ तो कही देसी कि ऊ भंइसियाक चमवा के बेची के लानल हे बितना।

राजा घार जाइके पइला आर काचा देइल तो देवान के सक भेल आर बुढ़ी से पूछल, तखन बुढ़ी ओहे बात कहइल जे बितना कहल रहे। राजा से रहल नी गेल आर सत जाने खातिर बितना के हंकाय भेजावल।

बितना राजा घार आइल, सोब के गोड़ लागल आर हंकावल कर कारण पूछल तखन राजा कहल – अरे बितना! तोञ् एते काचा कहाँ पावले? का तोञ् कहीं ले चोराय के तो नी लानलहे ?

बितना आपन कान छूवल, किरिया खाइल आर कहल हाथ जोरी के नांञ् मीरा! हम चोरी नी करले ही, ऊ जे भंइसियाक चमवा मांगल रहियोन, ओकरे बेची के काचा लानल ही। राजा के ई बात पतियार भेल। लोभे आइके घारेक सोब भंइसियन के मारेक हुकुम देल आर सुखाय के बेचे ले कहल।

राजाक हुकुम पाय के ओकर सिपाही सोब भंइस के मारला आर चाम सुखाय के बेचे ले गेला मगुर जन्दे जा हलथ तन्दही घीनाय के कहथ जा चमार टोला बाठे, हुवें लिये पारबथून। घुरते–घुरते थाकी गेला मगुर कहूँ कोय नी लेलथीन। निरास हेइ के घार घुरला। राजा देखी के गरम हेइ गेल आर गरइज के बितना के गारी दिये लागल – हरामी, पाजी, बितना हामर सोब भंइस के मरावल। हकांय लान सार बितना के, ओकरा तड़पाय–तड़पाय के मारब।

राजाक हुकुम पाय सिपाही कुदले बितना घार गेला आर बिना कहले धाय के घिसीयावले लानला।

राजा कहल – जा एकरा एगो बक्सा में भोरी के नदिया में बोहाय देहाक।

हुकुम पाय सिपाही सब एगो बक्सा में बितना के भोरला आर नदी में बोहाय देला।

दोसर राजाक बेटी अपन संगी–गुइया संग नदिये नहा हलीक।

नदी में बक्सा बोहाइल आवत देखी के छंकावइल। बक्सा के खोली के देखला तो हुवां एगो छोटे गो आदमी देखी के हायचोक हेइ गेला।

मगुर बितना ओखिन के उल्टी डाँटे लागल – किना ले हामरा छांकलाय, हाम देश भूले जा हली ई तोहिन ठीक नी करलाय ।

बितना के बुझाय के राजाक घार लेले गेला आर राजा के सोब हाल बताय देला। राजा बितना के बक्सा में भोरी के बोहावल बात के कहेले कहल तो ऊ सोब कही सुनावल। ओकर चालाकी के सुनी के राजा बड़ा खुस हेल आपन बेटी बिहा दियेक बात कहल। बिहाक बात सूनी के बितना कहल–मीरा! बिहाक बात पाछु करबाय, पइहिले हामरा ऊ राजा से बदला लिये दाय।

जखन तइक ओकरा नी मोरावब तखन तइक हामरा थीर नाञ्!

ई राजा के ऊ राजा से पुरान दुसमनी रहइ। से ले बितना के मदइत करेक बात करल। मदइत कर बात सुनी के बितना कहल – राजा साहेब। जदि तोहे हामरा एगो मोतीहाइर दाय नी, तब देखबाय, हाम ओकरा कइसे मोराबइ, ओकरा फहम नी चलतइ।''

राजा ओकरा दुगो मोतीहाइर देल। बितना बाजा–गाजा कर संगे आपन घार चलल। ओकरा देखी के लोग हायचोक हेला आर राजा के जाइके कही सुनावला। राजा फिन बितना के हंकावल। बितना मनेमन कुरचल आर आवे ले आना–कानी करे लागल। सिपाही लाने ले खूब फुसलावे लागला। ओखिन कर खोसामइद देखी के बितना हामी भरल आर राजा ठीन जाय ले राजी भेल। बितना मोतीहाइर पींघी के राजा घार पोंहचल। बितनाक घेंचाञ् हाइर देखी के सेप चुवे लागल आर फुसलावे लागलइ। पहिले तो कहे में आना–कानी करल मुदा राजाक लालच देखी के कहल – मीरा! तोहिन हामरा छोट बकसाय भोरल रहाय, से ले नझिके में रहली। बड़का में भोरल
रहतलाय तो हाम बेसी हेंठ जातली। मीरा! नी जानाहाय कि समुंदरे मोती पावाहे?

ई सुनी के सोबकर मुंहे सेप चुवे लागल। राजा करमाली के बोड़–बोड़ बक्सा बनवे कहल। बितना से कहल कि ई बात के आर दोसर ठीन नी कहबे ।

बक्सा बनल, दिन तय भेल आर गाड़ी में लादी के समुन्दर बाठे बाजा–गाजा कर संगे चलला। समुन्दर धाइर जाइके बक्सवइन के धाइरे राखला। जकरा–जकरा बेसी लोभ रहे ऊ पहिले भोराय ले खोजे लागला। तखन बितना राजा से पूछल – कहा मीरा! कोने–कोने पहिले जाबाय, तोञ् जकरा–जकरा कहबाय ओकरे पहिले भोरल जाइत, ओकर बादे दोसर दफे बाकी के।

राजा कहल – पहिले हामर देवान, आर बोड़ सिपाही जाता, ओकर पाछु बोड़–बोड़ जे हथ, ओखिन के भेजबे। ई नीयर दस अदमी के राजाक हुकुम से बक्सांय भोरल आर खाली जगन पखन भोरी देला ताकि ऊ छपुलाय नाञ्। ई नीयर भोरी के ऊपर ले बली लगाय के समुंदरे ठेलावल।

बक्सवइन बढ़ियाँ से डूबल तखन सोब अदमी के कहे लागल तोहिन मुरुख राजाक राइजे रही के तोहिनो मुरुख हेइ गेल हाय। तोहिन कर
बुइध सठियाय गेल होन, तबे नी तोहिन मोरे ले धेकला–धेकली हेव हाय।
तोहिन के जानेक चाहि कि जे बक्सा बली लगाय के डुबावल गेल, का ऊ डूबे छोड़ी के आर बाहइर बहराइत! अरे भाय! ओखिन हामरा मोरावे खातिर बक्सा में भोरल रहथ, से ले ओखिन के हाम्हु मोरावे खातिर हाम ई उपाय सोंचली। आब तोहिन जदि कोय ओखिन के बहरावे जाबाय तो डूबी के मोरबाय। हामीन आब मुरुख आर अतियाचारी राजा से छुटी पावली से ले खुसी मनावा। आब हामीन आपन राइज चलाबव। हामीन कर राइजे ना कोय छोट रहत ना कोय बोड़ हेवत। जे कमजोर अदमी के सतावत ओकरा ओइसने मारल जाइत।

बितनाक चालाकी देखी के सोब रीझी उठला आर आपन घार घुरला। रानी सोब जखन ई बात सुनला तो दुखे डूबी गेला आर फांसी लगाय के मोरी गेला। बितना पुरूब बाठेक राजाक बेटी संग बिहा करल आर राइज करे लागल।